विभिन्न संस्कृतियाँ

विभिन्न संस्कृतियाँ शृंखला, भाग–1

परमेश्वर की कहानी, हमारी कहानी

डॉ॰ डेविड प्लॉट

आइए हम उत्पत्ति अध्याय 3 देखें। सावधानी से सुनें! पिछले अध्ययन में हमें समय नहीं मिला था अतः हमें इस अध्ययन में बहुत कुछ करना है। तथापि, हम कुछ भिन्न करेंगे। मैं अपनी आराधना वरन् अध्ययन में आपका स्वागत करता हूं। मैं आपका प्राध्यापक डेविड प्लॉट हूं। मुझे पूरा विश्वास है में कलीसिया की वरन् मसीही के अनुयायियों में जो कमी है वह सुसमाचार बांटने में है अर्थात् अपने विश्वास के बांटने में है। हम में से अधिकांश जन विश्वास बांटते समय आत्मविश्वास नहीं रखते हैं और इसका परिणाम होता है कि यदि हम किसी के साथ, अपने परिवार से बाहर, विश्वास की चर्चा करें भी तो वह यदा–कदा ही होता है। तथापि हमने देखा है कि शिष्य बनाने में वचन का सुनाना पहला चरण है। अतः हमें आदेश दिया गया है कि हम परमेश्वर का वचन सुनाएं।

हम इसके लिए क्या करें? एक विकल्प है कि सुसमाचार प्रचार प्रशिक्षण की कक्षा का आयोजन करें परन्तु सुसमाचार प्रचार की कक्षाओं के इतिहास में मैंने देखा है कि इनमें अधिक लोग नहीं आते हैं। इसमें बाधाएं आ जाती हैं जैसे समय निकालना, नियत समय पर पहुंचना, समर्पित होना आदि। अतः मैं आपकी सुसमाचार कक्षा ले रहा हूं और हमारे यह छः अध्ययन इसी विषय पर होंगे कि अपने विश्वास की चर्चा कैसे करें। हम गंभीरता से अध्ययन करेंगे कि हमें सौंपा गया सुसमाचार किसी को सुनाने का अर्थ क्या है। अन्य संस्कृतियों में हम किस ओर अग्रसर हैं, मैं आपको इसकी एक झलक दिखाता हूं। हमारा दूतकार्यः ब्रुक हिल्स की कलीसिया का अस्तित्व ही इसलिए है कि वह सब जातियों में शिष्य बनाने के लिए परमेश्वर की महिमा के निमित्त अपने में मनोवेश प्रज्वलित करे। यह उनका प्रधान प्रयोजन है। अतः अब हम जो अध्ययन करने जा रहे हैं वह हमारे पिछले अध्ययनों के साथ संयोजित होता है – परमेश्वर की महिमा और आराधना की लालसा हमें प्रेरित करती है कि सब जातियों में शिष्य बनाएं। यह हमारा दूतकार्य है। यह शिक्षा वृहत्त है अतः इस पर ध्यान दें, इस शृंखला का उद्देश्य है ब्रुक हिल्स की कलीसिया को सुसज्जित करना, सक्षम बनाना तथा समर्थ करना कि वे जिस संस्कृति में भी रहें वचन का प्रचार करें। मैं यहां स्वीकार करना चाहता हूं कि मैं एक वर्ष से भी कम समय से पास्टर हूं और मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है कि पास्टर होना क्या होता है, कलीसिया की अगुवाई करना क्या होता है परन्तु एक वर्ष में मैंने जो वर्तमान स्थिति देखी है, विशेष करके हमारी एक वृहत्त कलीसिया की, उससे मेरा दृष्टिकोण यह हैः हम कलीसिया का

निर्माण दो बातों पर आधारित करते हैं। रविवार की सुबह एक युक्तियुक्त आराधना – यह सरल परन्तु गलत है, मेरी बात को समझने का प्रयास करें। मेरे विचार में यह सच है। रविवार की आराधना और कार्यक्रम मनुष्य को किसी स्थान विशेष में संभतः अनेक स्थानों में सप्ताह के एक दिन आकर्षित करते हैं। यदि हमारा यह प्रदर्शन उत्तम है और हमारा प्रचारक मोहिनी शक्ति रखता है तो हम सप्ताह में एक ही दिन मनुष्यों को आराधनालय में एकत्र कर सकते हैं और वे मसीह में विश्वास भी ला सकते हैं। इस प्रकार हमारी कलीसिया बढ़ेगी भी। इस संपूर्ण प्रक्रिया में, मेरे विचार में, हम उस मनमोहित करने वाले प्रचारक पर, और उस उत्तम प्रदर्शन पर अनुचित रूप से निर्भर करने लगते हैं और सोचते हैं कि यदि कलीसिया का प्रदर्शन सही हो तो हम मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं।

हमारी अन्तर्निहित पूर्वधारणा चाहे यह हो कि मनुष्यों को मसीह के निकट लाने की प्रभावी विधि यही है, मैं नहीं सोचता कि यह सत्य है। मेरे विचार में अधिकांश मनुष्य जिनका मसीह से संबंध नहीं है, वे प्रति सप्ताह इस आराधनालय में नहीं आते हैं। सच पूछें तो मैं ऐसी आशा भी नहीं रखता। तथापि, यहां 4,000 आराधक हैं जो सप्ताह के छः दिन समाज में अन्य मनुष्यों के संपर्क में रहेंगे। अतः जन समूह को आकर्षित करने के लिए उत्तम प्रदर्शन, उत्तम कार्यक्रमों में अपने संसाधन निवेश करने से अधिक अच्छा तो यह होगा कि हम अपने संसाधनों द्वारा ऐसे सिद्ध मनुष्यों को तैयार करें जो समाज में जाकर मनुष्यों को मसीह के लिए आकर्षित करें। अतः मैं यह चाहता हूं कि यह युक्ति कैसी भी प्रभावी क्यों न हो, परमेश्वर ने हमें ब्रुक हिल्स की कलीसिया में यह काम करने के लिए नहीं बुलाया है। यदि मुझे वरन् इन 4,000 मनुष्यों को परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए सुसज्जित, सक्षम और समर्थ किया गया है तो हम देखेंगे कि परमेश्वर यहां ऐसे अद्‌भुत कार्य कर रहा है जिनकी हमने कल्पना भी नहीं की होगी।

पिछले सप्ताह मैं अपने एक अच्छे मित्र और कलीसिया के महान् अगुवे से बातें कर रहा था और उन्हें अपनी कलीसिया की आराधना श्रृंखला के अध्ययनों के बारे में बता रहा था कि हमारी ब्रुक हिल्स कलीसिया की आराधना अविश्वासियों पर केन्द्रित नहीं अपितु परमेश्वर के जनों में परमेश्वर के वचन की उन्नति पर निर्भर है जो मनुष्यों को परमेश्वर की आराधना में मग्न करती है और वह हमें दूतकार्य में ऊर्जा प्रदान करती है। उन्हें यह सुनकर अचम्भा हुआ और वह कहने लगे, ''क्या आप नहीं सोचते कि यह विपरीत बुद्धि है?'' मैंने पूछा, ''आपका कहने की अर्थ क्या है?'' उन्होंने कहा, ''ब्रुक हिल्स की कलीसिया इस प्रकार, उन मनुष्यों तक कैसे पहुंचेगी जो बरमिंगघम में मसीह को नहीं जानते?'' मैंने कहा, ''हमारे सदस्य यह काम सप्ताह में छः दिन करेंगे।'' उन्होंने कहा, ''यदि आपकी आराधनाओं का मूल उद्‌देश्य अविश्वासियों को मसीह में लाने का नहीं है तो वे मसीह को कैसे जानेंगे?'' मैंने कहा, ''मेरे विचार में हमारे सदस्य उन्हें मसीह से परिचित कराएंगे।'' उन्होंने कहा, ''ठीक है, मान लें कि आपके सदस्य उन्हें मसीह में ले आते हैं, तो वे मसीह में उन्नति कैसे करेंगे?'' मैंने कहा, ''मुझे आशा है कि हमारे सदस्य उन्हें मसीह के शिष्य बनाने

के लिए सुसज्जित किए जाएंगे।'' मैंने उन्हें देखते हुए कहा, ''मैं सच में, परमेश्वर के जनों को कलीसियाई संस्थान पर निर्भर न रहकर उनकी सृष्टि के उद्देश्य के निमित्त मुक्त होते देखना चाहता हूं।'' वह आश्चर्यचकित हो गए और कहने लगे, ''यह अत्यधिक रोचक बात है!''

मैं कार में अवाक् बैठा सोचने लगा, ''क्या मैं चूक गया? क्या मैं इन सीधे मनुष्यों को – ब्रुक हिल्स कलीसिया को पथभ्रष्ट कर रहा हूं?'' उसी समय मुझे कुछ स्मरण हुआ जो मैं आपसे कहना चाहता हूं, ''मैं आप पर भरोसा करता हूं। मैं परमेश्वर के जनों पर विश्वास करता हूं। मैं परमेश्वर के जनों में प्रभु के सामर्थ्य के कार्य पर विश्वास करता हूं। हम कलीसिया रूप में अपने दूतकार्य की सफलता को किसी मोहक प्रचारक या किसी प्रदर्शन पर निर्भर रखने का जोखिम नहीं उठा रहे हैं। हम आप पर निर्भर हैं। हम सब मसीह की महिमा के निमित्त संसार को प्रभावित करने के लिए सुसज्जित, सक्षम और समर्थ किए जा रहे हैं। प्रदर्शन और कार्यक्रम नहीं, यह मनुष्य हैं परमेश्वर के साधन हैं जिनके द्वारा वह संसार को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस अध्ययन के पीछे यही एक उद्देश्य है। हम सुसज्जि, सक्षम एवं समर्थ किए जाएंगे। अच्छा तो अब हम आगे बढ़ते हैं।

इस शिक्षा से ग्रहण योग्य बात जो है, वह शिक्षा पूरी हो जाने पर हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए उधार की परिपूर्ण समझ है। यही नहीं, हमें यह भी समझ में आ जाएगा कि सुसमाचार संसार की विभिन्न संस्कृतियों में कैसे प्रासंगिक होता है। इसका परिणाम यह होगा कि हम अपनी कहानी अर्थात् सुसमाचार को किसी पृष्ठभूमि में बांट पाएंगे – सब जातियों में शिष्य बनाने के ईश्वरीय प्रयोजन में सहकारी होकर। हम अपना यह अध्ययन छः भागों में करेंगे और जो हमें प्राप्त होगा वह है, प्रत्येक जन अपनी कहानी अर्थात् सुसमाचार को किसी भी पृष्ठभूमि में बांटने के लिए तैयार हो जाएगा। अपने इस अध्ययन की झलक इस प्रकार है।

पहला भाग, इस अध्ययन में हम उत्पत्ति 3 में पाप के परिणामों का विश्लेषण करेंगे और समझने का प्रयास करेंगे कि हमारी कहानी परमेश्वर के उद्धार की कहानी में कैसे प्रासंगिक होती है।

दूसरा भाग, हम यीशु की विधि को देखेंगे जो उसने संसार में परमेश्वर पिता के उद्धार को लाने में अपनाई और समझने का प्रयास करेंगे कि हम भी कैसे, यीशु नाईं परमेश्वर के प्रयोजन में सहभागी हो सकते हैं।

तीसरा भाग, ध्यान दें! सुसमाचार कैसे दोषी मनुष्य को परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष सिद्ध करता है और सीखेंगे कि दोषी विवेक से ग्रस्त संस्कृतियों में सुसमाचार कैसे सुनाया जाए। अभी तो आपको इसमें समझ की बात दिखाई नहीं देती होगी आनेवाले महिनों में हमारी कलीसिया से लगभग 1500 मनुष्य अन्य संस्कृतियों में जाएंगे। यदि हम सब जातियों में शिष्य बनाएंगे तो हमारे लिए आवश्यक है कि उनमें सुसमाचार का प्रचार करना सीखें। अतः हम यह भी सीखेंगे।

चौथा भाग, हम देखेंगे कि परमेश्वर के भय से बाहर निकलने में सुसमाचार कैसे सामर्थ्य प्रदान करता है तथा यह भी हम सीखेंगे कि भय से ग्रस्त संस्कृतियों में सुसमाचार प्रचार कैसे करें।

पांचवा भाग, हम देखेंगे कि परमेश्वर के सम्मुख लज्जा अनुभव करने वालों को सुसमाचार कैसे सम्मान का स्थान दिलाता है और यह भी देखेंगे कि लज्जा से भरी संस्कृतियों में सुसमाचार प्रचार कैसे करें। यह धीरे–धीरे हमारी समझ में आएगा – इस अध्ययन में हम इस विषय में भी कुछ समझेंगे।

छठवां भाग, अपने अध्ययन को समाप्त करते हुए हम देखेंगे कि मनुष्यों को मसीह में लाने के लिए परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य और महिमा के प्रदर्शन हेतु हमारी सृष्टि की है।

यही हमारा लक्ष्य है। हमारी विधि यह है, हमारा अध्ययन सहकारी आराधना, वचन की शिक्षा, कक्षा की कार्यवाही में भाग लेना आदि होगा। ठीक? यहां कोई दर्शक मात्र नहीं होगा। सब कार्यवाही में भाग लेंगे। गृहकार्य का काम भी दिया जाएगा। ठीक है? अब मेरी बात पर ध्यान दें। मैं जानता हूं कि यह आपके लिए रूचि का विषय नहीं है। हमारे अध्ययन में विहित आपका गृहकार्य भी है और अन्ततः सुसमाचार प्रचार में आपकी व्यक्तिगत सहभागिता होगी और हमारी पाठ्यपुस्तक निःसन्देह, बाइबल है। आपको बाइबल उपलब्ध करवाई जाएगी।

तो आप तैयार हैं? हम परमेश्वर की कहानी और अपनी कहानी इसमें प्रासंगिक करेंगे। संसार में पाप का आगमन इसका कारण है। संसार में कलीसिया की उपस्थिति ही इसलिए है कि संसार में पाप है। परमेश्वर का प्रयोजन यही है कि संसार में पाप को और विभिन्न संस्कृतियों में उसके प्रभाव को समाप्त करे। इस कारण हमें उत्पत्ति 3 को समझना आवश्यक है। यदि हम उत्पत्ति को नहीं समझेंगे तो वह ऐसा होगा जैसे किसी कहानी के आरंभिक दो या तीन अध्यायों को छोड़कर आगे की कहानी पढ़ना अर्थात् मूल आधार से रहित अध्ययन। उत्पत्ति 3 अत्यधिक गूढ़ है। हम कभी नहीं समझ पाएंगे कि हमें उद्धारकर्ता की आवश्यकता क्यों है। उस उद्धारकर्ता को मरने की, मृतकों में से जी उठने की और फिर लौटकर आने की आवश्यकता क्यों है। वह उद्धारकर्ता अन्ततः सृष्टि को नाश क्यों करेगा और नई पृथ्वी एवं नया आकाश क्यों बनाएगा? ऐसा क्यों होगा? यह सब उत्पत्ति 3 को समझने पर ही अर्थपूर्ण होता है।

आइए हम पद 1 देखें। हम प्रथम दस पद पढ़ेंगे और संसार में पाप के प्रवेश का दृश्य देखेंगे।

''यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; उसने स्त्री से कहा, 'क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?' स्त्री ने सर्प से कहा, 'इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।'' तब सर्प ने स्त्री कहा, 'तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी

आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।' अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं, इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्त जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिए। तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम को पूछा, 'तू कहां है?' उसने कहा, 'मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था इसलिए छिप गया।''

इस अध्याय के आरंभिक पदों में, मैं चाहता हूं, कि हम परमेश्वर की कहानी को दो बातों को संयोजित होता देंखे। पहला, मैं चाहता हूं कि हम सृष्टि की समस्या को देखें जो पाप है। यहां से पाप संसार में आया और मेरे विचार में इसके तीन मुख्य प्रभाव हैं – उत्पत्ति 3 में पाप के तीन परिणाम। पहला है पद 7 में, फल खाते ही उनकी आंखें खुल गईं और उन्होंने पाया कि वे नंगे हैं। अतः उन्होंने अंजीर के पत्तों को जोड़ जोड़ कर लंगोट बनाए। अतः पहला प्रभाव है कि हम परमेश्वर की सृष्टि में दोषी हैं। यह अवस्था नंगा होने से अधिक गंभीर थी। इस समय उनकी निर्दोषिता समाप्त हो गइ थी। यह सबसे पहला अवसर था जब उनके विवेक ने उन्हें धिक्कारा था – उन्हें उचित और अनुचित में अन्तर ज्ञात हो गया था। वे जानते थे कि उन्होंने जो किया वह अनुचित था – परमेश्वर की दृष्टि में दोष था। यहां से दोषी विवेक सब मनुष्यों में आ गया। हम सब उचित और अनुचित समझते हैं और हम सब जानते हैं कि हमने कभी न कभी अनुचित कार्य किया है और परमेश्वर के समक्ष दोषी हैं।

दूसरी, हम परमेश्वर के समक्ष लज्जित हैं। उन्होंने ऐसा क्या काम किया कि लज्जा उत्पन्न होती? लिखा है कि उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर अपने लिए लंगोट बनाए। आदम और उसकी पत्नी ने वृक्षों के मध्य परमेश्वर की आहट सुनी। अब अध्याय दो के अन्त में देखें। पद 25 में लिखा है कि आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे परन्तु लजाते नहीं थे। अब पाप के आते ही वे परमेश्वर के समक्ष लजाने लगे और डरने भी लगे। यही लज्जा ने उन्हें दोषी बनाया। आदम हव्वा को दोष देने लगा और अन्ततः परमेश्वर से कहता है, ''यह स्त्री जो तूने मुझे दी उसने यह सब करवाया है।'' यहां हम देखते हैं कि अपराधी विवेक ही नहीं लज्जा भी मनुष्य में घर कर गई। पाप के परिणाम स्वरूप हमें परमेश्वर के सामने लज्जा आती है।

तीसरी बात, हम परमेश्वर से डरने लगे। परमेश्वर ने आदम को पुकारा, ''आदम, तू कहां है?'' उसने उत्तर दिया, ''मैंने वाटिका में तेरे आने की आहट सुनी तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा था इसलिए छिप गया।'' देखिए, परिस्थितियां कैसे बदल गईं। वे जो परमेश्वर की उपस्थिति से आनन्दित होते थे – उत्पत्ति 2, अब

उसकी उपस्थिति से डरने लगे। ऐसा क्यों हुआ? अध्याय 2 पद 17 में लिखा है, ''भले या बुरे का ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाः क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' अतः इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि वे डर रहे थे। वे जानते थे कि उन्होंने क्या किया है और डर रहे थे। परमेश्वर की वही उपस्थिति जो उन्हें आनन्द प्रदान करती थी अब उनके लिए भय का कारण बन गई थी। इस कारण वे छिप रहे थे। इस प्रकार, पाप के प्रवेश करने पर आदम और हव्वा को यह बोध हुआ कि उन्होंने अनुचित काम किया है। उन्होंने अपनी लज्जा को छिपाने के लिए पत्तों से लंगोट बनाए और वे परमेश्वर के समक्ष आने से डरने लगे।

मुझे स्मरण आता है कि कुछ वर्षों पूर्व मैं अपना सप्ताहान्त व्यतीत करने एक मसीही मठ में गया। यह वह समय था जब मैं कोई निर्णय लेना चाहता था और इस कारण कुछ समय एकान्त में रहना चाहता था। यह मठ मेरे घर के निकट था जहां आपको खाना मिलेगा, आराम करने को मिलेगा और वाटिकाओं में विचरण करने का अवसर प्राप्त होगा। यह एकान्तवास का अच्छा समय था, अतः मैं वहां गया। परिचायन सत्र में नहीं जाने के कारण मुझे यह बोध नहीं था कि मठ के किस भाग में जाने की अनुमति है और किस भाग में जाने की अनुमति नहीं है। कुछ भाग ऐसे थे जहां केवल भिक्षुक ही रहते थे। अतः पहले दिन प्रातःकाल विचरण करते हुए मैं द्वार खोलकर एक अति मनोरम स्थान में प्रवेश कर गया। वहां पेड़–पौधों और झाड़ियों के मध्य एक फौव्वारा था। मैंने उस प्रांगण के किनारे पर ही टहलना आरंभ कर दिया। वह चारों ओर ईमारतों से घिरा हुआ था। मैंने खिड़की से झांक कर देखा। मैंने देखा कि भिक्षु खाना कहां खाते थे, वे अध्ययन कहां करते थे – उनका पुस्तकालय आदि सब देखा। उसी समय मुझे यह बोध हुआ कि यह उन स्थानों में तो संभवतः नहीं है जहां मुझे जाने की अनुमति नहीं है।

उसी समय प्रांगण की दूसरी ओर का द्वार खुला और एक भिक्षु ने प्रवेश किया मैं डर गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मैं नहीं चाहता था कि वह भिक्षु मुझे वहां देखे। अतः मैं एक झाड़ी के पीछे छिप गया। मेरे पीछे मुझे एक खम्भा छिपाए हुए था। यह एक सच्ची कहानी है। मैं उसके पदचाप सुन सकता था। मन ही मन मैं प्रार्थना कर रहा था, ''प्रभु, मैं जानता हूं कि उसने मुझसे कहीं अधिक समय तेरे साथ व्यतीत किया है परन्तु मैं सच में यह चाहता हूं कि तू मुझे इस परिस्थिति से बचा ले।'' मैं पसीने से तर यही बिनती कर रहा था कि वह मुझे न देखे। मैं अपने को छिपाना नहीं चाहता। मेरे मन में शैतानी उभर आई कि छलांग लगाकर उसे डरा दूं परन्तु मैंने सोचा कि ऐसा व्यवहार उसके मनोवृत्त को तोड़ देगा। अतः मैं छिपा रहा और वह भिक्षु दूसरी ओर से बाहर निकल गया। वह ज्यों ही बाहर निकला त्यों ही मैं भी दोड़ा और वहां से बाहर आ गया। कहने का अर्थ यह है कि मुझे अपनी चूक का बोध हुआ था। मैं लज्जित था। मैं नहीं जानता कि यदि वह भिक्षु मुझे वहां देख लेता तो क्या होता।

अतः उत्पत्ति में हमारे सामने ये तीनों हैं। आपको अपराधबोध है, आपको लज्जा आ रही है और आपको डर भी लग रहा है। यह झलक संपूर्ण बाइबल को समझने में मूलभूत है क्योंकि हम सब इसी स्थिति में है। यह न भूलें कि मनुष्य को अपने अपराध विवेक में, लज्जा में और भय में छोड़ देना परमेश्वर का औचित्य है। हम उत्पत्ति अध्याय 3 में पाप के परिणाम की शक्ति को कम न आंकें और न ही आज अपने जीवन में उसे कम समझें, विशेष करके अपनी आज की संस्कृति में जो पाप के प्रभाव को कम बताती है वरन् उसको अनअस्तित्ववान कहती है। यदि हम पाप के इन परिणामों को नहीं समझेंगे तो हम शेष बाइबल को कभी नहीं समझेंगे। यह सृष्टि की समस्या है। सृष्टिकर्ता क्या करेगा? उसका निर्णय क्या है? सृष्टिकर्ता का निर्णय है, उद्धार का दान। मैं चाहता हूं कि हम यहां उत्पत्ति 3 में ही देखें कि परमेश्वर हमें जो परिदृश्य दिखा रहा है वह उद्धार के सम्बन्ध में संपूर्ण बाइबल में व्याप्त है।

आप अपनी अपनी बाइबल निकाल लें। मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 3 में जो काम आरंभ किया वह बाइबल के अन्त तक चलता है। सबसे पहले उद्धारकर्ता क्या करता है? वह दोषी को खोजता है। पद 9 – ''तू कहां है?'' इस समय आदम और हव्वा का विनाश निश्चित था। उन्हें मृत्युदण्ड दिया जा सकता था। परन्तु परमेश्वर उन्हें खोजता है और पहली बार हम देखते हैं कि पिता परमेश्वर अपनी सन्तान को खोज रहा है। हम यह बार–बार देखेंगे। उत्पत्ति अध्याय 12 में हम देखते हैं कि परमेश्वर अब्राहम को खोज रहा है जब कि वह एक मूर्तिपूजक मनुष्य था। परमेश्वर मूसा को खोज रहा था जबकि वह एक अपराधी था और विद्यान देश में भाग गया था। हम देखते हैं कि परमेश्वर याकूब को खोज रहा था जब वह पाप करके भाग रहा था। वह एलिय्याह को खोज रहा था जब वह परमेश्वर से और परमेश्वर के प्रयोजन से दूर भाग गया था। मत्ती 2:14 में यीशु चुंगी अधिकारी मत्ती से कहता है, ''मेरे पीछे हो लो'' वह संबन्धों का सूत्रपात कर रहा है। लूका 19:10 में यीशु ने कहा, ''मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' अतः हम एक ऐसे खोजी परमेश्वर को देखते हैं जो दोषी मनुष्यों को खोजता है।

मैं आपको यह दिखाना चाहता हूं। मेरे साथ लैव्यव्यवस्था की पुस्तक खोल लें। आप इन पदों को रेखांकित कर सकते हैं। मैं आपको यह दिखाना चाहता हूं कि परमेश्वर हमारे अपराधों के बदले में क्या करता है, वह हमारी लज्जा के बदले में क्या करता है, वह हमारे भय के बदले में क्या करता है। लैव्यव्यवस्था 5:5,6 पुराने नियम में परमेश्वर की प्रजा का आरंभ है। देखिए वह क्या कहता है, ''जब वह इन बातों में से किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उसने पाप किया हो वह उसको मान ले, और वह यहोवा के सामने अपनी दोष बलि ले लाए, अर्थात् उस पाप के कारण वह एक भेड़ या बकरी पाप बलि के लिए ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिए प्रायश्चित करे।'' परमेश्वर अपनी प्रजा के अपराध के लिए क्षमा की व्यवस्था करता है।

अब एज्रा अध्याय 9 देखें। यह पुराने नियम के अन्त के बहुत निकट है यद्यपि पुस्तकों में यह अन्तिम नहीं है। अन्तिम पुस्तक मलाकी है। कालक्रम में देखें तो यह पुराने नियम के अन्त में है। एज्रा 9:6 में देखिए, वह क्या प्रार्थना करता है। क्या परमेश्वर की प्रजा में अब भी दोष थे? ''हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर! मेरा मुंह काला है; क्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुंचा है। अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अधर्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश–देश के राजाओं के हाथ किए गए....''

पद 13 – दोष अभी समाप्त नहीं हुआ है, ''उस सबके बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जब कि हे परमेश्वर, तू ने हमारे अधर्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन् हम में से कितनों को बचा रखा है।''

पद 15 देखिए – ''हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! तू धर्मी है, हम बच कर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तरे सामने खड़ा नहीं रह सकता।'' उत्पत्ति 3 की समस्या अब भी चल रही है। परमेश्वर की प्रजा दोषी है और परमेश्वर उनको खोज रहा है परन्तु दोष की समस्या बनी हुई है।

अब यूहन्ना अध्याय 8 देखें। हमने पुराने नियम का आरंभ देखा और अन्त भी देखा। अब यीशु दृश्य में आता है। यीशु और यह दोष की समस्या कैसे संयोजित होते हैं? देखिए यूहन्ना (मत्ती, मरकुस और लूका के बाद) अध्याय 5, पद 46 पुराने नियम की समस्या के प्रकाश में अब यीशु दृश्य में उभरता है। वह क्या कहता है। वह धर्म के अगुओं के साथ विवाद कर रहा है। वे परमेश्वर के समक्ष निर्दोष होने के लिए व्यवस्था का पालन करते थे। यीशु ने उनसे कहा, ''तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? यदि मैं सच बोलता हूं तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?'' यीशु के कहने का अर्थ था कि उसमें कोई भी दोष नहीं था। वे उसमें एक भी पाप नहीं दिखा सकते थे। यीशु ने यहां एक परम्परा को तोड़ा। यीशु मर गय और फिर जी उठा देखिए यूहन्ना 16 में यीशु क्या करता है? वह पवित्र आत्मा भेजता है। संसार में पवित्र आत्मा का क्या कार्य है? देखिए यूहन्ना 16:8 में यीशु पवित्र आत्मा के विषय क्या कहता है, ''वह (पवित्र आत्मा) आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा।'' परमेश्वर का आत्मा मनुष्यों को उनके अपराधों का बोध कराएगा। हम उचित और अनुचित में अन्तर क्यों जानते हैं? हम में अपराध बोध क्यों है? क्योंकि परमेश्वर का आत्मा हम में यह काम करता है।

नये नियम में और आगे चलकर हम देखते हैं, ''जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' (2 कुरिन्थियों 5:21) ''धार्मिकता'' शब्द का

वास्तविक अर्थ है, निर्दोष, परमेश्वर के समक्ष उचित । उत्पत्ति 3 से लेकर संपूर्ण धर्मशास्त्र की सुन्दरता यही है कि परमेश्वर लगातार अपराधियों को या दोषी मनुष्यों को खोज रहा है और दोषमुक्त कर रहा है। उसने हमारे दोष मसीह यीशु पर डाल दिए हैं और निरापराध मसीह यीशु की धार्मिकता को लेकर हम पर जड़ दिया है – हमारे पाप के उपरान्त भी। यह आरंभ से अन्त तक धर्मशास्त्र की कहानी – परमेश्वर दोषी की खोज में है।

अब हम उत्पत्ति अध्याय 3 में दूसरी बात देखते हैं। परमेश्वर दोषी को खोजता ही नहीं उसका लज्जा को भी ढांकता है। उत्पत्ति 3 में हमने देखा के आदम और हव्वा ने अपनी लज्जा को ढांकने के लिए अंजीर के पत्ते, जोड़–जोड़ कर लंगोट बनाए थे। परन्तु वे असफल रहे। अतः परमेश्वर ने उसके लिए लज्जा ढांकने हेतु पशुओं की चमड़ी से वस्त्र बनाए। उत्पत्ति 3:21 में क्या लिखा है? ''यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।'' परमेश्वर ने उनकी लज्जा को ढांक दिया। उसने यह काम कैसे किया। यह गूढ़ भेद है। उसने पशुओं की चमड़ी काम में ली। बाइबल में पहली बार मृत्यु हुई। आदम और हव्वा के शरीर को ढांकने के लिए किसी पशु को अपनी चमड़ी देनी थी। परमेश्वर ने एक निर्दोष पशु का वध किया कि आदम और हव्वा की लज्जा को ढांके। यह दृश्य चलता रहेगा। अध्याय 4 में कैन और हाबिल परमेश्वर को बलि चढ़ाते हैं। देखिए पद 3, ''कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ ले आया, और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया।'' यहां परमेश्वर को ग्रहण करते हुए दर्शाया गया है। ग्रहण योग्य आराधना थी हाबिल के पहिलौठे पशु।

उत्पत्ति 8 में हम देखते हैं कि नूह नाव बना रहा है और जलप्रलय आने पर वह अपने परिवार के साथ उसमें सुरक्षित है। उसके पास सब जानवर भी नाव में हैं। उत्पत्ति 8:20 में लिखा है कि जब जल उतर गया तब नूह ने बाहर आकर परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई और उस पर शुद्ध पशु–पक्षियों की बलि चढ़ाई। हम यहां आरंभ में ही जो देख रहे है वह निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और गिनती की पुस्तकों में अधिक व्यावहारिक हो गया है। परमेश्वर अपनी प्रजा की लज्जा को ढांकने के लिए पशु बलि का विधान दे रहा है। यह पुराने नियम में एक सतत् अभ्यास है। अब मेरे साथ यशायाह की पुस्तक में आ जाइए। यहां लज्जा से पूर्ण मनुष्य को ढांकने का एक अद्भुत उदाहरण है।

मैं चाहता हूं कि आप यहां व्यक्त प्रतिस्थापन को ध्यान से पढ़ें। देखिए परमेश्वर के दास पर लज्जा डाली जा रही है और परमेश्वर की प्रजा को आदर प्रदान किया जा रहा है।

यह यीशु के विषय चर्चा करने वाला एक अद्भुत अंश है। ''निश्चय ही उसने (यीशु ने) हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया, तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।'' (यशायाह 53:4) यहां लज्जा कौन सह रहा है? यीशु!'' वह सताया गया तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने उस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।'' (53:7–9) आप देख रहे हैं कि उस पर लज्जा मढ़ दी गई थी। इसका परिणाम क्या हुआ?

अगले अध्याय में देखिए, परमेश्वर अपनी प्रजा से क्या कहता है? इसे रेखांकित कर लें, ''मत डर क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटेगी, मत घबरा, क्योंकि तू लज्जित न होगी और तुम पर सियाही न छाएगी; क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी, और अपने विधवापन की नाम धराई को फिर स्मरण न केरगी। क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ाने वाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा।'' (यशायाह 54:4,5) आपके समझ में आया? परमेश्वर कहता है कि वे अपनी लज्जा को स्मरण भी न करेंगे क्योंकि उसे परमेश्वर ने ऐसा ढांका है – मसीह पर लज्जा मढ़ दी है।

अब प्रकाशित वाक्य 19 में आ जाएं। कहानी के इस भाग का आरंभ उत्पत्ति में आदम की लज्जा से ही है। पाप और उसके साथ लज्जा। यहां प्रकाशितवाक्य 19:7 में परमेश्वर के वे जन जिन्होंने मसीह में विश्वास किया कि उन्हें अंक दे, उनका चित्रण है। हम अपने पूर्व के अध्ययन में भी इस पद को देख चुके हैं, ''आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेमने (जिसके बलिदान से हमारे पाप ढांके गए) का विवाह आ पहुंचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया।'' अपने पापों का आवरण नहीं प्रभु के सम्मान का आवरण। अध्याय 21 का पद 27 स्वर्ग का उल्लेख कर रहा है उत्पत्ति 3 में मनुष्य लज्जा से घिरा हुआ था। पद 27 देखिए, ''उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की पुस्तक में लिखे हैं।'' ध्यान रखें, बाइबल के आरंभ में परमेश्वर ने परमेश्वर एक निर्दोष पशु के बलिदान द्वारा अपने लोत्रों की लज्जा को ढांकता है और यह क्रम चलता रहता है। यूहन्ना 1:29 में यीशु दृश्य में आता है और यूहन्ना कहता है, ''देखो, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत के पापों को उठा ले जाता है।'' यीशु क्रूस पर अपना जीवन बलिदान करता

है। हमारी लज्जा उस पर डाल दी गई कि हम परमेश्वर के सम्मुख खड़े हों तो लज्जित न हों वरन् उसके सम्मान से सुसज्जित हो जाएं। परमेश्वर हमारे पाप को ढांकने के काम में लगा हुआ है। वह लज्जा से घिरे हुए मनुष्य को ढांकता है और दोषी की खोज में रहता है।

तीसरी बात, वह डरने वाले को सुरक्षा में रखता है। मनुष्य परमेश्वर से डरता है इसलिए परमेश्वर क्या करता है? वह उसे अपनी सुरक्षा में ले आता है। अब उत्पत्ति 3 में लौट आइए। परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी से कहा था कि वे वर्जित वृक्ष का फल न खाएं वरन् उस ओर देखें भी नहीं अन्यथा वे मर जाएंगे। आदम ने अपनी पत्नी का नाम क्या रखा था? आप लोग सतर्क हैं? ठीक है।

आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा। (उत्पत्ति 3:20) अर्थात् सब जीवित प्राणियों की माता। आप सोचेंगे संसार में पाप लाने वाली स्त्री को ऐसा नाम! उसने उसे हव्वा नाम क्यों दिया? क्योंकि परमेश्वर उससे एक प्रतिज्ञा की थी। आपको ध्यान होगा कि हम यह पाठ देख चुके हैं। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि स्त्री से उत्पन्न सन्तान बुराई और शैतान को कुचलेगी। (उत्पत्ति 3:15)

परमेश्वर डरने वालों को सुरक्षा में रखता है। कैसे? पद 23 और 24 में लिखा है कि परमेश्वर ने उन्हें अदन की वाटिका से निष्कासित कर दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों और घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।'' वह क्यों नहीं चाहता था कि आदम जीवन के वृक्ष तक पहुंचे? क्योंकि यदि वे उस वृक्ष का फल खा लेते तो अमर हो जाते। परमेश्वर नहीं चाहता था कि उसकी सृष्टि अपराध, लज्जा और भय में सदा बनी रहे। यही कारण था कि उसमें अदन की वाटिका को उनसे सुरक्षित किया कि वे जीवन का फल न खा पाएं। धर्मशास्त्र में हम बार–बार देखते हैं की मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति से डरता है।

इसे लिख लें। निर्गमन 3:4–6 – मूसा जलती हुई झाड़ी देखता है। वह अचम्भित होकर उसके निकट जाता है। उस आवाज सुनाई देती है, ''अपने जूते उतार दे। जहां तू खड़ा है, वह पवित्र स्थान है।'' परमेश्वर ने उससे कहा, ''मैं अब्राहम इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं।'' पद में लिखा है कि मूसा ने अपना चेहरा छिपा लिया – मूसा परमेश्वर से भयभीत हो गया था। निर्गमन 20:18 में इस्राएलियों ने पहाड़ से धूंआ उठता देखा तो भयभीत हो मूसा से बिनती की कि वह परमेश्वर से बात करे। यशायाह 6:1–8 में यशायाह परमेश्वर का दर्शन पाकर पुकार उठा, ''हाय में नाश हुआ।'' क्यों? क्योंकि मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति से डरता है। इब्रानियों 10:31 में परमेश्वर के हाथ में पड़ना भयानक बात कही गई है। – पाप के कारण उत्पन्न भय!

मैं प्रकाशितवाक्य में से आपको दो विषशे संदर्भ देना चाहता हूं जो परमेश्वर द्वारा भयभीत मनुष्य को सुरक्षा में रखने की चर्चा करते हैं। अध्याय 6:15 पढ़ें और देखें कि वह उत्पत्ति 3 का सा प्रतीत होता है क्या? ''तब

पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास और हर एक स्वतंत्र पहाड़ों की खोहों में और चट्टानों में जा छिपे, और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, 'हम पर गिर पड़ो; और हमको उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है?'' (6:15–17) यह परमेश्वर का भय है। पाप के कारण परमेश्वर से छिपना। प्रभु का धन्यवाद हो कि कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती है।

अब प्रकाशित वाक्य को उत्पत्ति 3 के प्रकाश में देखें। वे अदन की वाटिका से निष्कासित किए गए कि जीवन के वृक्ष का फल न खाने पाएं। तब परमेश्वर ने क्या किया? देखिए प्रकाशितवाक्य 22:1, ''फिर उसने मुझे बिलौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़कों के बीचों–बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन वृक्ष जिसमें बारह फसलें आती थीं। हर महिने एक फसल। उस वृक्ष के पत्तों से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। फिर श्राप न होगा; और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।'' ये अगले चार शब्द रेखांकित कीजिए। वे उसका मुंह देखेंगे। याह की स्तुति करो! हमारे पाप के कारण हमें उसकी उपस्थिति का भय होता है परन्तु उसने हमें सुरक्षा में रखा हुआ है और हमारे विश्वास के कारण हमें उस दिन के लिए रखा है जब हम उसका चेहरा देखेंगे और उसकी उपस्थिति में आनन्दित होंगे, भयभीत नहीं होंगे। यह एक अच्छी कहानी है– हमारे पाप से उसके उद्धार तक की कहानी परमेश्वर अपराधी की खोज में रहता है। परमेश्वर लज्जित मनुष्य को आवरण में रखता है। परमेश्वर भयभीत मनुष्य को सुरक्षित रखता है। ये सब बातें हमारे उद्धार के अवयव हैं। मैं कई बार विश्वासियों से बातें करता हूं जो जानते हैंकि वे परमेश्वर के समक्ष अब निर्दोष हैं परन्तु वे अब भी अपने पाप के कारण लज्जित हैं। वे इस विवेक से मुक्ति नहीं पा रहे हैं। मुझे ऐसे मनुष्यों से भेंट करने का अवसर मिलता है जो मसीह में विश्वास कर चुके हैं कि उनके पाप क्षमा हों और वे जानते हैं कि वे परमेश्वर के समक्ष निर्दोष बनाए गए हैं परन्तु वे संसार से भयभीत हैं। वे सब उद्धार के भागी हैं। मेरे विचार में यह हमारी संस्कृति का प्रभाव है। इसी कारण हमें विभिन्न पृष्ठभूमियों में सुसमाचार प्रचार के बारे में सोचना है परन्तु यहां इतना ही कहना पर्याप्त है कि परमेश्वर का उद्धार हमें खोजता है और जब हम अपराधी ही हैं वह हमारी लज्जा को ढांकता है तथा हमें भय से सुरक्षित रखता है।

इस परिदृश्य को अन्तर्ग्रहण करके मैं चाहता हूं कि हम कुछ और गहराई में जाएं और देखें कि हमारी कहानी परमेश्वर की कहानी में कैसे संयोजित होती है। अब मेरी बात समझने का प्रयास कीजिए। हमने जो वचन से अभी सीखा है उससे हमें जो महान् बोध होता है वह यह है कि हमारी कहानी परमेश्वर की कहानी में संयोजित होती है और परमेश्वर की कहानी हैः हमें पाप से उद्धार में लाना। हमारे पास एक कहानी है जो इससे मेल खाती है। मैं चाहता हूं कि हम इस कहानी को जिसे हमने अभी बाइबल में देखा

है वैयक्तिक बनाएं। मेरा एक मनोवांछित प्रश्न है, ''आपकी, विशेष करके विश्वासियों की कहानी क्या है? आप मसीह में विश्वास कैसे आए? मैंने यह प्रश्न अनेक मनुष्यों से पूछा है और अनेक उत्तर पाए हैं। मैं मन से आपके साथ ईमानदार रहना चाहता हूं। मुझे मेरे प्रश्न के जो उत्तर मिले हैं वे सन्तोषजनक नहीं रहे हैं। विभिन्न लोगों की विभिन्न कहानियां और वे विस्मय उत्पन्न करती हैं। मेरे कहने का अर्थ है कि हमारी प्रकृति है कि हम अपने इस आत्मिक पुनरावलोकन में लड़खड़ाते हैं। मैंने ऐसी कहानियां सुनी हैं कि यदि मैं परमेश्वर से दूर होता या मसीही विश्वास में नाममात्र रूचि रखता तो ऐसी कहानी सुनकर मैं पुनः विधर्मी हो जाता।

आप सोचेंगे कि यह कठोर शब्द हैं परन्तु मैं यहां क्षमा नहीं मागूंगा। हम सब को अपने विश्वास की कहानी स्पष्टता से और सामर्थ से उन्हें सुनाना है जो मसीह यीशु को नहीं जानते। यदि मैं आपसे कहूं कि आप मुझे पैंतालीस सैकण्ड से एक मिनट में सुनाए कि मसीह ने आपके जीवन में क्या किया है तो क्या आप मुझे स्पष्ट शब्दों में सामर्थी, संक्षिप्त एवं आकर्षक कहानी सुना पाएंगें कि मसीह ने आपके जीवन में क्या किया है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? यदि किसी बात में अच्छे हैं तो इसी बात में अच्छे हो। हमें मनुष्यों को यह बताने में दक्ष होना है कि मसीह ने हमारे लिए क्या किया। अतः आइए हम सब अपनी भावनाओं को उजागर करते हुए सोचें कि हम अपनी–अपनी कहानी को कैसे प्रभावी बना सकते हैं। परमेश्वर आपको पाप से उद्धार में कैसे लाया? मैं आपको सोचने के लिए कुछ मुद्दे देना चाहता हूं कि हम अपनी कहानी को मूल्यवान कैसे बना सकते हैं? यदि आपके पास एक पल है कि आप अपने जीवन में मसीह के काम का वर्णन सुनाए तो आप उसे मूल्यवान कैसे बनाएंगे।

सबसे पहले मैं कहूंगा कि उसे संक्षेप में कहें। यदि आपके पास केवल पैंतालीस सैकण्ड हैं तो आपकी कहानी कैसी होगी? यदि आप रेस्तरां में भोजन कर रहे हों या चाय काफी पी रहे हों या कार्यालय के कक्ष से जा रहे हों या अपने कुत्ते को घुमाने ले गए हैं तो आपको अति संक्षेप में अपनी कहानी सुनने योग्य होना है। हमें अधिक मनुष्यों का नाम भी नहीं लेना है कि उनकी भीड़ में हम खो जाएं। यह आवश्यक नहीं। हमें उन सब पुस्तकों के नाम भी नहीं गिनाने हैं जो आपने पिछले बारह वर्षों में पढ़ी या उन सभाओं का उल्लेख करें जहां हम उपस्थित हुए। केवल एक ही पंक्ति में हो और एक ही कथावस्तु हो। तीन साधारण बातें हैं। पहली, अपने पिछले जीवन का साधारण वर्णन – मसीह से पूर्व का जीवन। दूसरी बात, हम मसीह के संबंध में कैसे आए? यह हमारी कहानी का अति महत्त्वपूर्ण भाग है। तब तीसरी बात, मसीह के साथ जीवन आचरण का सरल वर्णन। अति सरल पूर्व–उत्तर–कालीन कथा। अति साधारण चित्रण। हमें अपनी कहानी न तो जटिल बनानी है और न ही नाटकीय। मैं वास्तव में यही कहूंगा कि नाटक से दूर ही रहें। हम प्रायः जो सुनते हैं वह या तो हमारी मद्यव्यसन या मादक पदार्थ सेवन या अनैतिक जीवन या अन्य जाति अनुष्ठान की कहानी होती है जिसे सुनकर श्रोता डर जाता है या फिर हममें से अधिकांश जन ने 5,

6 या 7 वर्ष की आयु में मसीह को ग्रहण किया था अतः हमें मद्यव्यसन आदि का अवसर प्राप्त नहीं हुआ जिसके कारण नाटक नहीं बना – अतः हम सोचते हैं कि हमारी कहानी में तत्व नहीं। मेरी राय में आप नाटक से दूर ही रहें। मैं आपको स्वतंत्रता देना चाहता हूं। परमेश्वर की कहानी में ही पर्याप्त नाटक है कि उसने मानवरूप धारण करके क्रूस पर लज्जा की मृत्यु सही फिर मृतकों में से जी उठा कि हम सब को पाप से उबार ले। परमेश्वर नाटक उपलब्ध कराए तो और आप निश्चय ही उसका निर्वाह करें। जब हम अपना नाटक बीच में ले आते हैं तो कहानी का वास्तविक नाटक पार्श्व में छिप जाता है। अतः अपनी कहानी को संक्षिप्त एवं सरल बनाएं।

तीसरी बात, केन्द्र से भटके नहीं। सदा स्मरण रखें कि परमेश्वर हमारी कहानी का केन्द्र है, हम नहीं। पूरी कहानी आपके मन परिवर्तन पर आधारित है – यीशु ने आपका मन परिवर्तन किया। परमेश्वर और मसीह यीशु कहानी के मुख्य नायक हैं, अतः उन्हें केन्द्र में रखें। उसे समझने योग्य बनाएं। अपने आप को उनके स्थान में रखें – वे आराधना में नहीं जाते हैं वे मसीह यीशु को नहीं जानते हैं। वे परमेश्वर को नहीं जानते हैं। उनकी स्थिति के अनुकूल कहानी सुनाए। धार्मिक शब्दावलियां जैसे ''पाश्चाताप'', ''मसीह को दिल में ग्रहण करना'' काम में न ले क्यों कि सुनने वाले इन शब्दों को नहीं समझते हैं। अतः धार्मिक शब्द काम में न लें।

दीनता बनाए रखें। शब्दों द्वारा अपने को बड़ा और दूसरे को नीचा दिखाने से बचें। आपकी यह कहानी का एक उद्देश्य है। हम अभी भी एक यात्रा पर हैं। इसे स्वीकार करें और दीनतापूर्वक कहानी सुनाए।

अन्त में, स्पष्ट कहें कि मसीह ने आपके जीवन में क्या अन्तर उत्पन्न किया है। ''मैं इसे 45 सैकण्ड में कैसे सुना पाऊंगा, डेव?'' सोचें। यूहन्ना 3 में नीकुदेमुस की कहानी कैसे बनेगी? ''मसीह ने मेरे जीवन में एक अन्तर उत्पन्न किया। मुझे अहसास हुआ कि मेरे लिए परमेश्वर का प्रेम मुझे नया जीवन दे सकता है।'' देखिए कैसी साधारण कहानी। यूहन्ना 4 में कुएं पर सामरी स्त्री की कहानी, ''उसने मेरे जीवन की सब बातें बता दीं। फिर भी उसने मुझ से प्रेम रखा।'' व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री की कहानी, ''लोग मुझे पथरवाह करना चाहते थे परन्तु यीशु ने मुझे बचा लिया। सबने मुझे त्याग दिया था परन्तु उसने मुझे अपनाया।'' यूहन्ना 9 – ''मुझे अधिक जानकारी तो नहीं परन्तु यह तो निश्चित है कि मैं अंधा था और अब आपको देख सकता हूं। यीशु ने ही तो यह अन्तर उत्पन्न किया।'' साधारण कहानी!

आपके जीवन में क्या है? आप में कुछ ऐसे हैं जो संपूर्ण जीवन भय से ग्रस्त रहे हैं। मनुष्यों से संपर्क करने का भय, परमेश्वर का भय। यीशु से साक्षातकार करने पर आपमें आत्मविश्वास जागृत होने लगा और आपका दृष्टिकोण ही बदल गया। अति संभव है कि आप अकेलेपन से संघर्ष कर रहे हैं। आप शायद टूटे हुए परिवार में बड़े हुए या आपका विवाहित जीवन सफल नहीं रहा और आप अकेले पड़ गए। ऐसे समय में

आपकी भेंट यीशु से हुई और आपको उसने अपने परिवार में ले लिया। अब वह आपके साथ है। वह आपकी देखभाल करता है। संभवतः आप अपने अतीत से लज्जित हैं, अपने कामों से। आपने अपने अतीत पर विजय पाने के लिए सब कुछ किया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यीशु से भेंट करने पर आपको अहसास हुआ कि आप अपना भविष्य भूल सकते हैं क्योंकि उसने आपके लिए जो कुछ किया, उसके कारण। अब आपकी स्वतंत्रता के लिए बदलाव आ गया है। आप भविष्य में आगे बढ़ सकते हैं।

मैं नहीं जानता कि आपकी कहानियां क्या हैं परन्तु एक बात है। हमारी कलीसिया में अनेक प्रचार सभाएं आयोजित की गईं। हमने ट्रैक्ट बांटे। प्रचार भी बहुत होते हैं, (बिलीग्राहम आपके लिए हैं)। बस में प्रचार किए जाते हैं। व्यवसायिक स्त्री पुरुषों में प्रचार, दुःखी स्त्री–पुरुषों में प्रचार, ग़रीबों–धनवानों में प्रचार और नाना प्रकार के कार्यक्रम हम करते हैं। मैं नहीं कहता कि यह उचित नहीं। आपने सुना! हमने यह सब तो किया परन्तु फिर भी एक सुसमाचार प्रचार में स्वयं को असमर्थ अनुभव करते हैं। मैं पूर्वी एशिया में सुसमाचार प्रचार की चर्चा करता हूं और वे बिना कार्यक्रम के 100 विश्वासी ले आते हैं। परमेश्वर ने बेजोड़ रीति से प्रत्येक विश्वासी को वरदान दिया है कि वह अपना विश्वास बांटे। उसने आपको एक कहानी दी है जो उसकी मुख्य कहानी से मेल खाती है। अतः अपनी कहानी को देखें कि वह परमेश्वर की कहानी से कैसे मेल खाती है और स्वतंत्र होकर मनुष्यों को अपनी कहानी सुनाएं। तो हम अपना कक्षा कार्य करें। हम श्रोतागण नहीं, सहभागी हैं। आपको जो करना है वह है कि आप अपनी कहानी पर विचार करें और अपनी कहानी को 100 शब्दों में तैयार करें। मेरी कहानी सुनिए। मैं एक मसीही परिवार में बड़ा हुआ। मेरे माता पिता ईश्वर परायण जन थे अतः मेरी कहानी में कोई नाटक नहीं है।

मेरे जीवन में ऐसा समय था जब मेरा जीवन केवल ''करो'' तक सीमित था। अतः मुझे यह विश्वास हो गया कि यदि मैं उचित काम करूंगा तो परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करूंगा। यदि मैं अथक परिश्रम करूंगा तो परमेश्वर मुझे स्वीकार करेगा। परन्तु मसीह से भेंट करने पर मुझे यह बोध हुआ कि मसीह जीवन यह अनिवार्य नहीं कि हमें क्या करना है। यह मसीह का कार्य है। मेरे लिए सब प्रयास उसने किए हैं मुझे तो केवल उसके अनुग्रह का वरदान स्वीकार करना है। इस एकमात्र सत्य ने मेरे जीवन को संपूर्ण अनन्तकाल के लिए क्रांतिकारी बना दिया है। यदि मैं सच कहूं तो यही मेरी कहानी है और मैं अब भी उचित कार्य करने में प्रयासरत हूं। स्थापित प्रतिमानों को प्राप्त करने में प्रयासरत हूं परन्तु यीशु बार–बार मुझसे कहता है कि वह मेरे स्थान पर प्रयास कर लेगा यदि मैं उसे करने दूं।

यह मेरी 100 शब्द की कहानी है। मैं आशा करता हूं कि यह सरल है और यीशु पर आधारित है – जो परिवर्तन वह मेरे जीवन में लाया मैंने उन शब्दों का प्रयोग नहीं किया है जो श्रोता की समझ से बाहर हैं।

यह मेरे जीवन में मसीह द्वारा लाए गए परिवर्तन से संबन्धित है। अब आप अपनी कहानी तैयार करें। मैं आपको कुछ मिनट देता हूं कि आप अपनी कहानी 100 शब्दों में लिखें।

हम अपनी इस कहानी को आपस में सुना सकते हैं। माता–पिता, बच्चों को सुना सकते हैं। आप अपनी कहानी को गुप्त रख सकते हैं परन्तु हमारा उद्देश्य यह नहीं है। हमें अपनी कहानी दूसरों को सुनाना है।

अतः अपनी कहानी पर विचार करें।